वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 5 | जनवरी से जून 2013 | अंक – 1

वृक्ष उत्पादक मेला

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने दिनांक 21 तथा 22 फरवरी 2013 को पांचवां वृक्ष उत्पादक मेला आयोजित किया। श्री एम. करूणाकरण, भा.प्र.से., जिला कलैक्टर ने धारणीय वृक्ष खेती के लिए रोपण प्रौद्योगिकियों पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प. ने स्वागत कार्यक्रम में बोलते हुए परिषद् की विस्तार गतिविधियों पर चर्चा की और इस बात पर बल दिया कि अनुसन्धान उपलब्धियों को हितधारकों विशेषकर किसानों तक पहुँचाया जाये। डॉ. एन. कृष्णकुमार, भा.व.से., निदेशक, व.आ.वृ.प्र.सं. ने अपने सम्बोधन में वृक्ष उत्पादक मेला के विषय में विस्तार से चर्चा की। वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने वृक्ष उत्पादक मेला 2013 के एक भाग के रूप में दिनांक 21 तथा 22 फरवरी 2013 को "Sustainable Tree Farming : Wood Security, Food Security and Livelihood" पर एक कार्यशाला का आयोजन भी किया। तमिलनाडु तथा पुडुचेरी के सभी जिलों तथा केरल में पालक्काड जिले से लगभग 1700 किसानों ने वृक्ष उत्पादक मेले में भाग लिया।

वृक्ष उत्पादक मेले का स्वागत सत्र

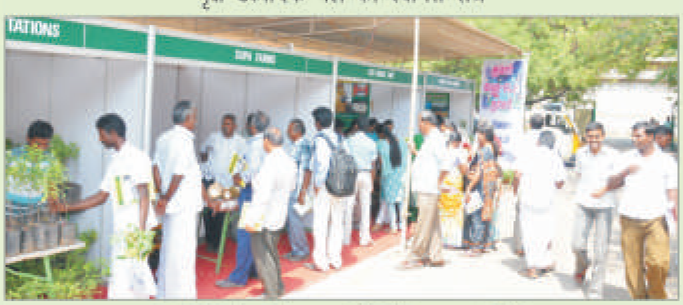

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में वृक्ष उत्पादक मेला

मरूस्थलीकरण रोक के लिए विश्व दिवस का आयोजन

- **भा.वा.अ.शि.प., देहरादून** द्वारा दिनांक 17 जून 2013 को मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस मनाया गया। इस वर्ष का विषय था "Drought and Water Scarcity"। मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस वर्ष 1995 से मनाना प्रारम्भ किया गया ताकि अकाल के प्रभावों तथा मरूस्थलीकरण रोक पर अन्तर्राष्ट्रीय सहायोग के लिए जन जागरूकता पैदा की जा सके तथा मरूस्थलीकरण रोक के लिए संयुक्त राष्ट्र समझौते को लागू किया जा सके। तकनीकी सत्र के दौरान विषयवस्तु विशेषज्ञों श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प. डॉ. पी. पी. भोजवेद, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, प्रो. एस. पी. सिंह, चेयर ऑफ एक्सीलेंस, वन अनुसन्धान संस्थान–सम–विश्वविद्यालय तथा श्रीमती नीना ग्रेवाल, भा.व.से., अपर निदेशक, उत्तराखण्ड जलागम प्रबन्धन निदेशालय ने जल संरक्षण, वन जल विज्ञान, जलागम प्रबन्धन तथा हिमालय के जल टावरो पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को उजागर किया। इस अवसर पर दो प्रचार पुस्तिकाए "Rain Water Harvesting and Augmentation of Water Resources for Sustainable Land and Ecosystem Management" तथा "Rejuvenation of Gharats (Water mills) for Sustainable Land and Ecosystem Management in Uttrakhand" भी विमोचित की गई। सेमीनार में भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों ने सहभागिता की।

सेमिनार का उद्‌घाटन करते हुए उच्चाधिकारी

- **शु.व.अ.सं., जोधपुर** ने भी दिनांक 17 जून 2013 को मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस आयोजित किया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ. एम.एस. कुमावत, कुलपति, सरदार पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी ने भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ. टी. एस. राठौर, निदेशक, शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर, श्री एम. आर. बालोच, भा.व.से., जी.सी.(आर) ने भी मरूस्थलीकरण रोक पर अपने विचार प्रकट किये।

डायरेक्ट–टू–कन्ज्यूमर योजना

डायरेक्ट–टू–कन्ज्यूमर योजना के अधीन श्री रामेश्वर दास, निदेशक, व.उ.सं, रांची द्वारा दिनांक 15 मार्च 2013 को खुंटी जिले के जिउरी गांव के छः किसानों को लाख की खेती में प्रोत्साहन देने के लिए सिचांई एवं अन्य प्रबन्धन में लागत राशि प्रदान की गई। इस परियोजना में फ्लेमेंजिया पर लाख रोपण मूल्य तथा अन्य तकनीकी सहयोग संस्थान द्वारा उपलब्ध करवाया गया। इस तकनीक द्वारा लाख उत्पादन से एक किसान, श्री सूतो मानकी को 2.45 लाख की अतिरिक्त आय हुई जिसके कारण अन्य किसानों में इसे अंगीकृत करने की रूचि उत्पन्न हुई है।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने यूकेलिप्टस, *कैजूरीना, एलन्थस,* मेलिया, बांस, थैसपीसिया तथा अकेशिया के वानस्पतिक बहुलीकरण के लिए 180 वर्ग मी. की मूल क्यारी कक्ष सुविधा Mother Bed Chamber Facility स्थापित की है। इस सुविधा से उत्कृष्ट क्लोन उत्पन्न किये जायेंगे तथा इन्हे डायरेक्ट–टू–कन्ज्यूमर योजना के अधीन ग्राहकों को उपलब्ध करवाया जायेगा।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में मूल क्यारी कक्ष सुविधा की स्थापना

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने दिनांक 7 मार्च 2013 को कृषि विज्ञान केन्द्र, बागलकोट, कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड में चन्दन वृक्ष उत्पादक किसानों तथा वन अधिकारियों के लिए "Insect pest and disease problems of sandalwood under cultivation and their management" पर एक संवादात्मक–सह–सूचना वितरण बैठक आयोजित की। इस बैठक में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने पब्लिक प्राईवेट सहभागिता के अधीन अगरबत्ती की डंडी बनाने के लिए बांस के प्रयोग हेतु दिनांक 21 जनवरी 2013 को बांस कम्पोजिट केन्द्र में एक प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं, नवयुवकों तथा किसानों को एक सरल मशीन का प्रयोग करके अगरबत्ती बनाना सिखाकर आय में वृद्धि करना है। संस्थान में बांस हस्तशिल्प पर दिनांक 14 से 20 मार्च 2013 को एक प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला आयोजित की गई जिसके सहभागियों को बांस की टोकरियां, सोफे, कुर्सियां, ट्रे, पैन, चूड़िया, हैयर बैंड इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

बाँस से अगरबत्ती की डंडी बनाने का प्रशिक्षण

व.जै.सं., हैदराबाद ने दिनांक 9 मार्च 2013 को कलाकारों तथा किसानों हेतु आजीविका उपलब्ध करवाने के लिए *गिवोटिया रोप्लरीफार्मिस* ग्रिफिथ की कृषि वानिकी पद्धतियों के अधीन एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने दिनांक 16 मार्च 2013 को संस्थान की शिलारू अनुसन्धान पौधशाला में समशीतोष्ण औषधीय पादपों के उत्पादन की विभिन्न तकनीकों के प्रयोगात्मक प्रदर्शन करने के लिए एक दिवसीय "शैक्षिक भ्रमण" आयोजित किया। इस भ्रमण ने हिमाचल प्रदेश के खटनोल (शिमला) तथा निचार (किन्नौर) हिमाचल प्रदेश से 20 किसानों ने सहभागिता की।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने "निम्नीकृत पहाड़ियों की पुनर्स्थापन के लिए वर्षा जल संचयन तथा वनीकरण" पर दिनांक 13 मार्च 2013 को एक प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला आयोजित की। सहभागियों को गुआपाडा/छतरीपाडा ग्राम, बारा नांदरा खाओ वन ब्लॉक बांसवाडा के प्रयोगात्मक स्थलों के स्थल दौरे के दौरान कार्य का संक्षिप्त विवरण दिया गया। संस्थान ने मेहंदी तथा इस्बगोल के नाशीकीटों तथा रोगों के प्रबन्धन पर दिनांक 20 मार्च 2013 को कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली में एक प्रशिक्षण आयोजित किया। इसमें पाली जिले के 45 किसानों ने सहभागिता की।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में "मेहंदी तथा इस्बगोल में नाशकीटों तथा रोगों पर प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प. की विदेशी बैठकों/कार्यशालाओं/संगोष्ठी इत्यादि में सहभागिता

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक; श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार); डॉ. सुधांशु गुप्ता, सचिव; श्री पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (पर्यावरण प्रबन्धन); श्री सुधीर कुमार, विशेष निदेशक (पर्यावरण प्रबन्धन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, डॉ. एन. रामाराव, वैज्ञानिक–ई, व.जै.सं., हैदराबाद; डॉ. एच. बी. वशिष्ट, वैज्ञानिक–ई, व.अ.सं, देहरादून तथा डॉ. वी. मोहन, वैज्ञानिक – ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 2 से 14 मार्च 2013 को विभिन्न खनिज क्षेत्रों, उद्योगों के पुनरूद्धार के प्रत्यक्ष अनुभव को प्राप्त करने के लिए आस्ट्रेलिया का दौरा किया। वहां दल ने उद्योगों और सरकारी कर्मचारियों से भेटवार्ता भी की।

डॉ. पी. पी. भोजवेद, निदेशक, तथा श्री एम. पी. सिंह, प्रमुख, जलवायु परिवर्तन तथा वन प्रभाव प्रभाग, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने दिनांक 23 से 28 फरवरी 2013 से "Transitions to sustainable Forest Management

and Rehabilitation" की तीसरी प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने के लिए इंडोनेशिया का दौरा किया।

डॉ. एन. कृष्णकुमार, निदेशक; श्री टी. पी. रघुनाथ, समूह समन्वयक (अनुसन्धान); डॉ. बी. गुरुदेव सिंह, वैज्ञानिक–जी तथा डॉ. ए. निकोडीमस, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर (टी.एन.) ने एक परियोजना कार्यशाला में तथा AusAID activity 60794 के कार्यान्वयन से सम्बन्धित बैठक में सहभागिता करने के लिए दिनांक 19 से 25 मई 2013 तक आस्ट्रेलिया का दौरा किया गया।

डॉ. के. पालानीसामी, वैज्ञानिक–एफ, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने दिनांक 24–25 जनवरी 2013 को "वन जैवविविधता" पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए कोरिया गणराज्य का दौरा किया। उन्होंने दिनांक 25–30 मार्च 2013 को "World Teak Conference" में सहभागिता करने के लिए थाईलैंड का दौरा भी किया गया।

डॉ. संगीता गुप्ता, वैज्ञानिक–एफ, व.अ.सं., देहरादून ने दिनांक 17 से 23 फरवरी 2013 को "219[st] RISH Symposium" में सहभागिता करने के लिए जापान का दौरा किया। उन्होने "World Wood Day Event" में सहभागिता करने के लिए दिनांक 17 से 27 मार्च 2013 तक तंजानिया का दौरा भी किया।

कार्यशालाए / सैमीनार / बैठक इत्यादि

- **भा.वा.अ.शि.प., देहरादून** ने निम्नलिखित का आयोजन किया
  - भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में दिनांक 21 मार्च 2013 को "Integrating forest based enterprise with rural development for livelihood support and economic growth" पर एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून के वरिष्ठ अधिकारियों सहित हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश से सरपंच तथा राज्य वन विभागों, वन पंचायतों, ग्राम सभाओं से हितधारकों तथा गैर सरकारी संगठनों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में 150 से अधिक सहभागियों ने सहभागिता की।
  - उच्च स्तरीय अनुसन्धान तथा विस्तार सलाहकार समिति (हिलरैक) की पहली बैठक दिनांक 21 फरवरी 2013 को डॉ. राम प्रसाद की अध्यक्षता में भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में आयोजित की गई। इस समिति में भा.वा.अ.शि.प. के वरिष्ठ अधिकारी तथा अनुसन्धानकर्ताओं सहित आई.यू.सी.एन. से डॉ. एम. एन. झा, डॉ. जे. के. रावत, डॉ. टी. पी. सिंह जैसे विशेषज्ञ सम्मिलित थे। समिति ने सुझाव दिया कि वानिकी के उप सैक्टरों जैसे एन.टी.एफ.पी. तथा जैवविविधता को भी भा.वा.अ.शि.प. के अनुसन्धान अधिदेश में सम्मिलित किया जाए।
  - महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. की अध्यक्षता में भा.वा.अ.शि.प. के प्रमण्डल कक्ष में दिनांक 30–31 मई 2013 को चौदहवीं अनुसन्धान योजना समिति बैठक (आर.पी.सी) में 631.23 लाख के बजट सहित वर्तमान वर्ष (2013–14) के लिए चार अनुसन्धान क्षेत्रों में 76 नई परियोजनाएं अनुमोदित की गई।
  - स्लेम परियोजना की नेशनल स्टीयरिंग कमेटी (एन.एस.सी.) की चौथी बैठक दिनांक 4 से 5 अप्रैल 2013 को हैदाराबाद में श्रीमती मीरा महर्षि, विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अधिकारियों एन.एस.सी. के सदस्य, विश्व बैंक, स्लेम–टी.एफ.ओ. सदस्य, एस.पी.ए.सी.सी. तथा केयर, मृदा तथा भू–सर्वेक्षण कृषि मंत्रालय, वन जैवविविधता संस्थान, रेगिस्तानीकरण प्रकोष्ठ, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक में श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा सदस्य सचिव, एन.एस.सी. ने परियोजना के कार्यान्वयन से सम्बन्धित की गई विशेष कार्रवाइयों, परियोजना सहभागियों से प्राप्त तिमाही एवं अर्द्धवार्षिक प्रतिवेदनों, आधार रेखा प्रतिवेदन पर सूचना इत्यादि पर प्रस्तुतिकरण दिया।

स्लेम गतिविधियों पर प्रचार पुस्तिकाओं का विमोचन

व.अ.सं., देहरादून ने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में दिनांक 6 से 7 मार्च 2013 को किसानों, स्वयं सहायता समूह, गैर सरकारी संगठनों तथा कृषि आधारित उद्योगों के लिए पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब वन विभाग तथा काष्ठ उद्योगों के सहयोग से "Role of farmers in sustainable supply of wood for industries" पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का उद्घाटन श्री सुरजीत कुमार ज्यानी, माननीय वन एवं श्रम मंत्री, पंजाब सरकार ने किया। इस कार्यशाला में डॉ. पी. पी. भोजवेद, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने हरित पंजाब मिशन पर अपने विचार प्रकट किये। संस्थान ने "Revision of National Working Plan Code" पर दिनांक 16 मई 2013 को एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। जिसमे डी.जी. एफ. एण्ड एस.एस. सहित सभी राज्यों के प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वरिष्ठ वन अधिकारियों तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय से अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा गठित टास्क फोर्स की दूसरी बैठक दिनांक 29 से 30 जनवरी 2013 को आयोजित की। इस बैठक में डॉ. जे. पी. तिवारी, पूर्व डीन, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, जी.बी. पंत कृषि तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर ने अध्यक्ष के रूप में तथा डॉ. एन. बी. सिंह, निदेशक (विस्तार), डॉ. वाई. एस. परमार, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौनी सोलन, डॉ. एच. एस. गिनवाल, वैज्ञानिक – एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून डॉ. मनोज श्रीवास्तव, कुल सचिव, पी.पी.वी. तथा एफ.आर.ए., नई दिल्ली, डॉ. रवि प्रकाश, रजिस्ट्रार, पी.पी.वी. एण्ड एफ.आर.ए. नई दिल्ली तथा डॉ. बी. गुरुदेव सिंह, वैज्ञानिक – जी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने सदस्यों के रूप में अपनी भूमिका निभाई। समिति ने पी.पी.वी. तथा एफ.आर.ए. अधिनियम 2001 के अधीन नोटिफिकेशन के लिए प्रस्तुत तथा अनुशंसित दिशानिर्देशों को अनुमोदित किया। संस्थान ने दिनांक 10 जून 2013 को यूकेलिप्टस गॉल वास्प तथा भविष्य की रणनीतियां पर एक कार्यशाला आयोजित की।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में टास्क फोर्स की दूसरी बैठक

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने काष्ठ उद्योग को सहायता देने तथा लोगों को काष्ठ प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षित करने के लिए कर्नाटक राज्य वन उद्योग निगम लिमिटेड (के.एस.एफ.आई.सी) / उद्यमियों / उद्योगपतियों / आरामिल मालिकों / निर्माण क्षेत्र तथा बढ़ई वर्ग के लिए उन्नत काष्ठ कार्य मशीनों पर एक संवादात्मक बैठक आयोजित की। संस्थान ने दिनांक 14 फरवरी 2013 को निमार्ताओं के लिए काष्ठ आधारित पहलुओं पर एक दूसरी संवादात्मक बैठक आयोजित की। काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान ने यह बैठक मौजूदा प्रौद्योगिकियों को ग्राहकों तथा विशेष रूप से निमार्ताओं को बेचने के लिए आयोजित की।

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित अचानकमार–अमरकंटक जीवमंडल रिजर्व के लिए मुख्य संस्थान परियोजना के तहत दिनांक 23 मार्च 2013 को कोनी, बिलासपुर में अचानकमार–अमरकंटक जीवमंडल रिजर्व पर एक कार्यशाला आयोजित की। संस्थान ने "Recent Advances in Applied Statistics and its Application in Forestry" पर दिनांक 15 से 17 अप्रैल 2013 को एक राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित किया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने प्रदर्शन ग्राम लाणाबांका के ग्रामीणों के लाभ के लिए प्रयोगशाला से भू–स्थल तक प्रौद्योगियों को स्थानांतरित करने को सुविधा जनक बनाने के लिए हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से दिनांक 31 जनवरी 2013 को राजगढ़ में ग्रामीणों की एक दिवसीय कार्यशाला–सह–बैठक आयोजित की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- **वन अनुसन्धान संस्थान,** देहरादून ने निम्नलिखित प्रशिक्षण आयोजित किये :
  - भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 11 से 15 फरवरी 2013 तक "पौधशाला तथा क्लोनीय प्रवर्धन तकनीकें" पर मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण।
  - हरित पंजाब मिशन के अधीन दिनांक 18 से 22 फरवरी 2013 को पंजाब वन विभाग के अग्रगामी कर्मचारियों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम। प्रशिक्षण का उद्घाटन डॉ. पी. पी. भोजवेद, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा किया गया।

पंजाब वन विभागों के अग्रगामी कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण

  - सुगन्ध तथा स्वाद विकास केन्द्र (एम.एफ.डी.सी.) कन्नौज के सहयोग से दिनांक 26 से 30 जून 2013 तक "Essential Oils, Perfumery and Aromatherapy" पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला। विभिन्न क्षेत्रों तथा देश के विभिन्न भागों से लगभग 32 सहभागियों ने इसमें भाग लिया।
  - दिनांक 30 मार्च 2013 को विकास नगर तहसील (जिला देहरादून) के साहापुर तथा बालूवाला ग्राम में "Quality silk Production using Herbal Product 'Samriddhi' for silkworm farmers" पर दो प्रशिक्षण। 91 रेशम उत्पादकों ने इसमें सहभागिता की।

Quality silk Production using Herbal Product 'Samriddhi' for silkworm farmers पर प्रशिक्षण

गैनोडर्मा ल्यूसीडम के उत्पादन पर प्रशिक्षणों का आयोजन

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने औषधीय मशरूम के कृत्रिम उत्पादन पर दिनांक 26 फरवरी 2013 तथा माह अप्रैल 2013 में बागवान समिति श्यामपुर, प्रेम नगर के लिए दो एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। वन व्याधिकी प्रभाग, व.अ.सं., देहरादून में *गैनोडर्मा ल्यूसीडम* के उत्पादन पर दिनांक 4 से 8 मार्च 2013 तक एक पांच दिवसीय प्रायोगिक प्रशिक्षण स्थानीय मशरूम उत्पादकों तथा किसानों के लिए तथा दिनांक 29 तथा 30 अप्रैल 2013 को एक दो दिवसीय प्रायोगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम मै. फ्लैक्स फूड इन्डस्ट्रीज, लालतपड़, हरिद्वार रोड़, देहरादून के प्रबन्धक तथा तकनीकी सहायकों के लिए आयोजित किया गया।

गैनोडर्मा ल्यूसीडम

गैनोडर्मा ल्यूसीडम के कृत्रिम उत्पादन का प्रशिक्षण देते हुए व.अ.सं., देहरादून के वैज्ञानिक

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने मध्य तथा पश्चिमी भारत में साइटस (CITES) में सम्मिलित विभिन्न एजेसियों के लिए 16 से 18 जनवरी 2013 तक "Convention on International Trade in Endangered Species (CITES) of wild fauna and flora" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्य रूप से साइट, इसके ढांचा, कार्य करने की

विधा, प्रक्रिया तथा प्रजातियों को सम्मिलित करने की अर्हता, वन्य प्राणि अपराध नियंत्रण में डब्ल्यू.सी.सी.बी. की भूमिका तथा साइटस के कार्यान्वयन इत्यादि पर आधारित था। सोलह राज्यों से 16 सहभागियों ने इस में भाग लिया। संस्थान ने दिनांक 19 से 21 मार्च 2013 को साइटस पर एक जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यशाला भी आयोजित की जो कि उत्तर तथा उत्तरपूर्वी भारत में साइटस कार्यान्वयन में सम्मिलित विभिन्न एजेंसियों के लिए थी। विभिन्न राज्यों से 19 सहभागियों ने कार्यशाला में सहभागिता की।

Convention on International Trade in Endangered Species (CITES) पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यशाला

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने दिनांक 11 से 22 मार्च 2013 तक "आनुवंशिक इंजीनियरिंग" पर एक विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। भा.वा.अ.शि.प. के विभिन्न संस्थानों से 6 वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की। संस्थान ने 24 से 28 जून 2013 को पौधशाला तथा क्लोनीय प्रौद्योगिकी पर एक सप्ताहिक प्रशिक्षण आयोजित किया।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने दिनांक 18 से 22 फरवरी 2013 तक किसानों, उद्यमियों तथा विद्यार्थियों सहित 24 सहभागियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। संस्थान ने कर्नाटक वन विभाग के 15 वन परिक्षेत्र अधिकारियों के लिए "Identification of Wood and Issuing Certificate" पर एक लघु अवधि प्रशिक्षण दिनांक 28 जनवरी से 1 फरवरी 2013 तक आयोजित किया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने दिनांक 25 से 27 फरवरी 2013 तक स्लेम परियोंजना के अन्तर्गत उत्तर पूर्वी भारत में झूम खेती पद्धतियों तथा आजीविका अवसर पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य वन विभाग, विश्व विद्यालयों, गैर सरकारी संगठनों तथा प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने दिनांक 5 जून 2013 को हस्तशिल्पियों, बेत किसानों, गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों तथा विविध विभागों के क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए "Cane/Rattan conservation and promotion of traditional Cane handicraft for sustainable livelihood for Dzongu Tribal Reserve Area, North Sikkim, India" पर एक प्रशिक्षण आयोजित किया।

व.उ.सं., रांची ने "Lac cultivation through Scientific Method" पर दिनांक 22 जनवरी 2013 को कोलीबीरा (सिमडेगा वन विभाग) झारखण्ड में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें 148 उत्पादकों/किसानों तथा वन परिक्षेत्र अधिकारियों ने सहभागिता की। संस्थान ने इसी प्रकार का प्रशिक्षण दिनांक 23 जनवरी 2013 को वन विभाग सिमडेगा, झारखण्ड के कार्यालय परिसर में आयोजित किया। जिसमें 84 उत्पादक/किसानों ने सहभागिता की। संस्थान द्वारा दिनांक 24 से 28 जून 2013 को "Rural livelihood promotion though scientific lac cultivation and management" पर एक साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे पंचायत मुखिया, गैर सरकारी संगठनों तथा किसानों ने सहभागिता की।

व.जै.सं., हैदराबाद ने दिनांक 29 मार्च 2013 मेडक, जिले (आन्ध्र प्रदेश) के रामायणा पेट गांव में किसानों के लिए "Demonstration of Agro-forestry models in *Wrightia tinctoria* and *Gmelina arborea* tree species in semi-arid tropics of Andhra Pradesh" पर प्रदर्शन–सह–प्रशिक्षण आयोजित किया।

Demonstration of Agro-forestry models in *Wrightia tinctoria* and *Gmelina arborea* tree species in semi-arid tropics of Andhra Pradesh पर प्रदर्शन/प्रशिक्षण

व.जै.सं., हैदराबाद ने दिनांक 26 से 28 फरवरी 2013 तक स्लेम परियोजना के अन्तर्गत "Climate Change Adaptability and Impact of land Degradation on Biodiversity Conservation" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने दिनांक 20 मार्च 2013 को वन प्रशिक्षण संस्थान, सुन्दर नगर में "Application of technological and Research Interventions for Enhancement of Productivity" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें राज्य वन विभाग के कार्य क्षेत्रीय कर्मचारियों तथा उन्नतशील किसानों ने भाग लिया। संस्थान ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय प्रायोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यक्रम "Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants" अटल बिहारी बाजपेयी माउटनेरिंग एण्ड एलाइड स्पोर्टस इंस्टीटयूट, मनाली (हि.प्र.) में दिनांक 22 से 24 मई 2013 को आयोजित किया। लगभग 50 हितधारकों जिसमे ग्राम पंचायत, गैर सरकारी संगठनों, स्कूल के प्रधानाचार्यों, प्रैस रिपोर्टरों, सामाजिक कार्यकर्तो इको कल्ब के सदस्यों, हर्बल उद्योग के प्रतिनिधियों ने सक्रिय भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा जनवरी 2013 से मार्च 2013 तक समेकित जलागम प्रबन्धन सदस्यों के लिए 19 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिसमें लगभग 500 सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया।

वैज्ञानिक कर्मचारियों के क्षमता निर्माण के मानव संसाधन विकास प्रयासों के रूप में भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा इस अवधि के दौरान दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिसमें 50 सहभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

बांस तकनीकी सहायता समूह (बी.टी.एस.जी.) भा.वा.अ.शि.प. प्रशिक्षण कार्यक्रम

व.अ.सं., देहरादून ने राष्ट्रीय बांस मिशन बी.टी.एस.जी.– भा.वा.अ.शि.प. के अधीन उत्तराखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के किसानों/शिल्पकारों के लिए बांस से बने हस्तशिल्प बनाने के लिए दिनांक 15 से 19 जनवरी 2013 पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया।

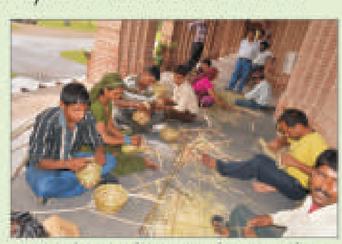

व.अ.सं. देहरादून में बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. (एन.बी.एम.) कार्यक्रम के अधीन दिनांक 24 से 28 जून 2013 तक मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के किसानों तथा हस्तशिल्पियों के लिए बांस हस्तशिल्प पर एक विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर में बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण

व.आ.आ.वि.के. (सी.एफ.एल.ई.), अगरतला ने दिनांक 18 से 22 मार्च 2013 को त्रिपुरा के किसानों तथा हस्तशिल्पियों के लिए बांस हस्तशिल्प पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया।

भा.वा.अ.शि.प. के प्रकाशन

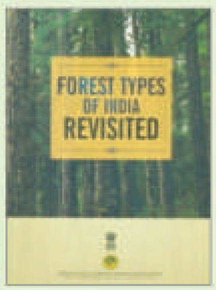

भारत के वन प्रारूपों की समीक्षा पर आधारित एक पुस्तक **"Forest Types of India Revisited"** दिनांक 17 मई 2013 को विमोचित हुई। यह देश के वनों में जलवायु परिवर्तन के अनुश्रवण के लिए आधार रेखा के रूप में कार्य करेगी।

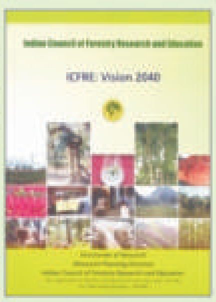

भारत के वनों पर आधारित आगामी कार्यक्रमों पर **"ICFRE : Vision 2040"** तैयार किया गया। यह दस्तावेज उत्पादकता बढ़ाने, जलवायु परिवर्तन तथा इसके प्रभावों तथा न्यूनीकरण रणनीतियों के लिए खाद्य सुरक्षा तथा आजीविका सहायता, जैवविविधता संरक्षण तथा पारिस्थितकीय सुरक्षा, वन आनुवंशिक संसाधन प्रबन्धन की समस्याओं को सुलझायेगा।

भा.वा.अ.शि.प. ने पुस्तिका **"Forestry Research : ICFRE Supporting Rural & Tribal Livelihoods"** प्रकाशित की। इस पुस्तिका में भा.वा.अ.शि.प. की महत्वपूर्ण अनुसन्धान उपलब्धियां जैसे हाल ही की प्रौद्योगिकी उत्पाद तथा प्रक्रियाएं, अनुसन्धान तथा विस्तार रणनीतियों का विवरण है जो कि ग्रामों, वन सीमांत तथा वन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तथा अन्य हितधारकों जैसे वन विभागों तथा उद्योगों के लिए अत्यन्त लाभदायक होगी।

भारत के वनों पर आधारित आकडों से सम्बन्धित पुस्तक **"Forestry Statistics India 2011"** प्रकाशित की गई तथा दिनांक 22 जनवरी 2013 को महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विमोचित की गई। यह पुस्तक वर्ष में दो बार प्रकाशित हुई।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किये :

- निम्नीकृत पहाडियों के पुनरूद्धार तथा लोगों की आजीविका में वर्षा जल संभरण
- निम्नीकृत पहाडियों के पुनरूद्धार के दौरान कार्बन जब्तीकरण

स्लेम–टी.एफ.ओ. प्रकाशन

I) स्लेम–सी.पी.पी. न्यूजलैटर अंक 3 सं. 1 तथा अंक 4 सं. 1

II) "Healthy Soil: Healthy Life "पर मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस के अवसर पर एक सैमीनार की कार्यवाही

III) "Findings of the Baseline Study and Monitoring and Evalution Framwork" पर दो दिवसीय संवादात्मक कार्यशाला की कार्यवाहियां

Iv) "Participatory model for water harvesting and development of community pastures in Thar desert" पर प्रचार पुस्तिका

V) "Rehabilition of degraded bamboo forests in Madhya Pradesh" पर प्रचार पुस्तिका

Vi) "Agarbatti preparation from degraded bamboo forests in Madhya Pradesh" पर प्रचार पुस्तिका

VII) "Agro-biodiversity innovations for sustainable land and ecosystem management in Orissa" पर प्रचार पुस्तिका

VIII) "sustainable land and ecosystem management in shifting cultivation areas of Nagaland" पर प्रचार पुस्तिका

XI) स्लेम–टी.एफ.ओ. का वार्षिक तथा अर्धवार्षिक प्रतिवेदन

अनुसन्धान

व.अ.सं., देहरादून ने सफलतापूर्वक किण्वित *लैन्टाना कमारा* तथा पाइन नीडल को इथानोल में हाइड्रोलाइजेट किया। सूक्ष्म जीवों के सह संवर्धन जैसे *सैकहैरोममाइसेस कैरेविसिया* तथा *पिकहिया स्टिप्टीज* परम्परागत प्रक्रिया से प्राप्त किण्वकों की तुलना में बेहतर किण्वन एजेंट साबित हुए।

व.अ.सं., देहरादून ने दस अभिज्ञात सफेद तथा भूरे क्षय (Rot) कवक के मध्य *ट्राईकोडर्मा विरिडे* तथा *कापरीनस डिस्सैमीनेटस* सर्वश्रेष्ठ सैलूलोज उत्पादक के रूप में अभिज्ञात किये।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने बैक्टीरिया के सात आइसोलेट, कीटरोग जनक कवक की दो प्रजातियाँ, परजीवियों की दो प्रजातियों तथा कैजुरीना पर पाई जाने वाली बालो वाली सूंडी *लैमनटेरिया एम्पला* पर एक परभक्षी मत्कुण (Bug) की एक प्रजाति को देखा गया।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने विभिन्न निष्क्रिय वातावरणों के अधीन काष्ठ के उष्मीय सुधार के लिए माइक्रो प्रोसेसर नियंत्रित निर्वात आपाक डिजाइन किया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने भारत में वंश नैस्टीसैला के अधीन नवीन मकड़ी परिवार "नैस्टीसिडे" को खोजा।

परामर्शी

कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिले में खनन प्रभावित क्षेत्रों के लिए पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना (आर.एण्ड.आर.)

कर्नाटक सरकार ने भा.वा.अ.शि.प. को बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों में 166 खदानों की पुनरूद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना तैयार करने के लिए परामर्शी का कार्य सौपा है। वर्ग ए तथा बी (वर्ग अवैधता के आधार पर) की 71 खदानों के लिए आर.एण्ड.आर. योजना तैयार की गई तथा कर्नाटक सरकार के द्वारा माननीय सर्वोच्च न्यायलय को प्रस्तुत की गई। इनमें से 67 आर.एण्ड.आर. योजनाएं माननीय सर्वोच्च न्यायलय के सी.ई.सी. द्वारा अनुमोदित की गई।

भा.वा.अ.शि.प. दल योजना के अनुसार खनन स्थलों को सत्यापित करते हुए

डी.आर.आर. खदान चित्रदुर्ग में वैज्ञानिक रूप से खनित गड्ढा

राजभाषा

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के विस्तार निदेशालय अंतर्गत मीडिया एवं विस्तार प्रभाग द्वारा सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 27 जून 2013 को राजभाषा हिन्दी के कार्यान्यवन पर एक कार्यशाला आयोजित की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. एस. पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प. थे तथा मुख्य वक्ता श्री एस. पी. चौबे, निदेशक (राजभाषा), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली थे। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने सहभागियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि केवल हिन्दी भाषी नहीं अपितु गैर हिन्दी भाषी को भी हिन्दी में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि हमारी राजभाषा हिन्दी ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें एक सूत्र में पिरोती है। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान भी सम्प्रेषण में सहायक सिद्ध होता है। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. एस.पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प. द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उन्होने कहा कि दैनिक कार्यों में हिन्दी को आसानी से प्रयोग किया जा सकता है परन्तु इसके लिए इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। श्री एस.पी. चौबे, निदेशक (राजभाषा), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली ने राजभाषा के नियमों तथा राजभाषा पर संसदीय समिति के प्रक्रिया पहलुओं पर विस्तारपूर्वक बतलाया। कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक तथा श्री रमाकान्त मिश्र द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में भा.वा.अ.शि.प. तथा व.अ.सं., देहरादून के अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

भा.वा.अ.शि.प. में हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला

विशिष्ट अतिथियों का दौरा

श्री टी. के. ए. नायर, माननीय प्रधानमंत्री के सलाहकार ने दिनांक 20 मार्च 2013 को वन अनुसन्धान संस्थान का दौरा किया तथा सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा एम.एस.सी. कोर्स के विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

डॉ. आर. के पचौरी, अध्यक्ष, जलवायु परिवर्तन पर अन्तर सरकारी पैनल (आई.पी.सी.सी.) ने दिनांक 26 जून 2013 को वन अनुसन्धान संस्थान का दौरा किया तथा भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों को सम्बोधित किया।

श्री के. टी. पचाईमल, माननीय वन मंत्री, तमिलनाडु ने श्री गौतम डे, भा.व.से. प्र.मु.व.स. तथा एच.ओ.एफ.एफ., तमिलनाडु, वन विभाग तथा अन्य वरिष्ठ वन अधिकारियों के साथ गास वन संग्रहालय, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का दिनांक 6 जनवरी 2013 को दौरा किया।

श्री के.टी. पचाईमल, माननीय वन मंत्री तमिलनाडु, गास वन संग्रहालय, व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का भ्रमण करते हुए

किसान मेला

व.अ.सं., देहरादून ने डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज यमुना नगर हरियाणा में दिनांक 23 मार्च 2013 को एक दिवसीय कार्यशाला–सह–किसान मेला आयोजित किया। इस मेले के आयोजन का उद्देश्य किसानों, हरियाणा वन विभाग, काष्ठ तथा हरियाणा के काष्ठ तथा प्लाई उद्योग तथा व.अ.सं., देहरादून के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाना था ताकि समस्याओं पर विचार–विमर्श करके समस्याओं का समाधान निकाला जा सके। इस अवसर पर डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं., देहरादून ने अपने विचार व्यक्त किये तथा हरियाणा तथा पंजाब राज्यों में भू तथा जल संसाधानों के बेहतर प्रबन्धन के लिए कृषि वानिकी के महत्व को उजागर किया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा "महाकौशल विज्ञान मेला" जो कि मध्य प्रदेश की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा जबलपुर में दिनांक 24 से 26 फरवरी 2013 को आयोजित किया गया, में सहभागिता की गई।

औपचारिक वानिकी शिक्षा में सुधार

देश में वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. ढांचात्मक विकास तथा राष्ट्रीय सेमीनारों में शिक्षकों के दौरे तथा विद्यार्थी शैक्षिक दौरों के लिए विश्वविद्यालयों को अनुदान देती है। भा.वा.अ.शि.प. ने दिनांक 1 जनवरी से 30 जनवरी 2013 के दौरान दस विश्वविद्यालयों को 115.00 लाख का अनुदान दिया।

वार्षिक पुनरीक्षण

भा.वा.अ.शि.प. नियमित रूप से अनुसन्धान परियोजनाओं का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन कर रहा है। 261 जारी तथा पूर्ण अनुसन्धान परियोजनाओं की समीक्षा की गई तथा परियोजनाओं के उद्देश्यों को समय से प्राप्त करने के लिए सुधारात्मक उपाय सुझाए गए।

विविध

विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून 2013

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा संस्थान के सूचना केन्द्र के सामने एक प्रदर्शनी लगाई गई। वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने यह दिवस पंचवटी प्रकृति मंच, जोरहाट के एक पर्यावरण आधारित एन.जी.ओ. के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया। शु.व.अ.सं., जोधपुर ने भी विश्व पर्यावरण दिवस वनस्पति विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में मनाया।

विश्व वानिकी दिवस दिनांक 21 जून 2013

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में भी इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्थान के छः संग्रहालयों में सभी के लिए इस अवसर पर निःशुल्क प्रविष्टि थी।

भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा दिनांक 21 जून 2013 को विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। जोरहाट जिले के लगभग 2500 स्कूली छात्र वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में इस अवसर पर एकत्रित हुए। यह समारोह संयुक्त रूप से जोरहाट जिले के इंस्पैक्टर आफ स्कूल तथा व.व.अ.सं, जोरहाट द्वारा मनाया गया।

जैवविविधता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस

जैवविविधता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस 2013 भा.वा.अ.शि.प. के विभिन्न संभागीय संस्थानों तथा केन्द्रों में मनाया गया। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों द्वारा स्कूली छात्रों के लिए "जल तथा जैवविविधता" विषय के अधीन ड्राइंग तथा पेंटिंग, प्रश्नोत्तरी तथा नारा लेखन प्रतियोगिताए आयोजित की गई।

जैव विविधता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के दौरान व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में पेंटिंग प्रतियोगिता

पेटेंट

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने एक पेटेंट "A Process for obtaining phyoecdysteroids form weeds of amaranthaceae for the synchronized maturation of mulberry silkworm (Indian Patent No. 1401/DEI/2013 Dated 10.05.2013) के लिए आवेदन किया।

विश्व वानिकी दिवस के दौरान सभा को संबोधित करते हुए निदेशक, व.व.अ.सं. जोरहाट

श्री के. जूड सेखर, भा.वा.अ.शि.प. के नये महानिदेशक

श्री के जूड सेखर, भा.व.से. (ओ.आर.: 1976), महानिदेशक वन तथा विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली ने दिनांक 4 जून 2013 के अपराह में महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के पद का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया।

- "वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण www.icfre.gov.in पर उपलब्ध है।

संरक्षक :

श्री के. जूड सेखर, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), **अध्यक्ष**

श्री विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), **मानद सम्पादक**

श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), **सदस्य**

प्रेषक :

श्री विवेक खाण्डेकर

सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), विस्तार निदेशालय,

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्

पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006

ई–मेल : adg_mp@icfre.org

दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693